राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
राजभवन, पटना–800022

ई–मेल–**pr.rajbhavan@gmail.com**
prrajbhavanbihar@gmail.com
मोबाईल–9431283596

प्रेस–विज्ञप्ति

भारतीय संस्कृति, कला और साहित्य को बिहार के अवदान अनुपम रहे हैं–राज्यपाल

पटना, 28 अक्टूबर 2018

''बिहार की धरती के सपूतों का भारतीय संस्कृति, कला, भाषा और साहित्य की दुनियाँ को कई अनुपम अवदान रहे हैं। भारतीय शिक्षित समाज, लोकतांत्रिक व्यवस्था और समतामूलक समन्वयकारी सोच को विकसित करने में बिहार ने सदा महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। ज्ञान, कर्म और नीति की सुदीर्घ परम्परा बिहार में रही है।'' –उक्त उद्‌गार, महामहिम राज्यपाल श्री लाल जी टंडन ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली द्वारा स्थानीय तारामंडल सभागार में 'संस्कृति से संवाद श्रृंखला' के 10वें संस्करण के रूप में संस्कृत, हिन्दी एवं प्राकृत–पालि के प्रकांड विद्वान आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव के सम्मान में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में संबोधित करते हुए राज्यपाल श्री टंडन ने कहा कि बिहार में कौटिल्य, चंद्रगुप्त, याज्ञवल्क्य, मंडन मिश्र – भारती मिश्र सहित अनेक विद्वान दार्शनिकों एवं तत्वचिंतकों की सुदीर्घ परम्परा रही है। विक्रमशिला एवं प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में विश्व के भिन्न–भिन्न भागों से विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिए आते थे। ज्ञान, कर्म, कला और संस्कृति के क्षेत्र में बिहार का अमूल्य योगदान रहा है।

राज्यपाल ने इकबाल के शेर ''यूनान, मिश्र, रोमां सब मिट गए जहाँ से'' –को उद्धृत करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति अनेक आक्रमणकारियों के प्रहारों को झेलकर आज भी सतत् विकासमान है। ज्ञान, कर्म और नीति का त्रिवेणी –भारतीय संस्कृति और साहित्य में संगमित होती है। राज्यपाल ने कहा कि भारतीय संस्कृति में सबके समाहार और समन्वय की विराट चेष्टा हुई है। समतावादी और न्यायपरक समाज के निर्माण का प्रयास भारतीय संस्कृति की अन्यतम विशेषता है। राज्यपाल ने कहा कि कालान्तर में भारतीय संस्कृति में जो विसंगतियाँ आयीं, उनके निराकरण के लिए हमारा संविधान और उदार सामाजिक–दार्शनिक चिंतन पर्याप्त हैं। श्री टंडन ने कहा कि डॉ॰ अम्बेदकर ने भी माना है कि अनेक विसंगतियों की बावजूद भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में सर्वोत्तम संस्कृति है।

राज्यपाल ने कहा कि साहित्यकार स्वयं इतिहास–सृजन तो करते ही हैं, इतिहास रचनेवालों का भी निर्माण करते हैं। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि शिवाजी महाराज कविवर भूषण को काफी सम्मान देते थे। राज्यपाल ने कहा कि हिन्दी, संस्कृत तथा पालि–प्राकृत के महापंडित आचार्य रंजन सूरिदेव ने जैन–ग्रंथों का अध्ययन कर अपने जो विचार व्यक्त किए हैं, वे साहित्य की निधि हैं।

राज्यपाल ने कहा कि कार्यक्रम में आत्यन्तिक अस्वस्था के कारण श्रीरंजन सूरिदेव जी की गैरमौजूदगी के बावजूद, उनकी साहित्यिक प्रेरणा हम सबको उनके प्रति श्रद्धावनत होने का सुअवसर देती है। राज्यपाल ने कहा कि साहित्यकार देश और समाज को नयी दिशा और दृष्टि प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि ''श्रीरंजन सूरिदेव जी के सारस्वत अवदान के प्रति अपना आदर प्रकट करने मैं इस कार्यक्रम के बाद अस्पताल में जाकर उनसे मिलूँगा और उन्हें सम्मानित करूँगा।''

आगे पृष्ठ...2 पर

बाद में राज्यपाल श्री टंडन ने कार्यक्रम के उद्घाटन–सत्र की समाप्ति के बाद, कंकड़बाग, पटना स्थित 'साईं हॉस्पीटल' जाकर अस्पताल में भर्त्ती एवं सख्त रूप से बीमार श्रीरंजन सूरिदेव जी को अंगवस्त्रम् एवं प्रतीक–चिह्न देकर सम्मानित किया एवं उनके शीघ्र स्वस्थ होने तथा सुदीर्घ जीवन के लिए अपनी मंगलकामनाएँ व्यक्त की। ज्ञातव्य है कि आज ही श्रीरंजन सूरिदेव का जन्मदिन भी है और उन्होंने अपने 93 वर्ष पूरे किए हैं। राज्यपाल ने आचार्य सूरिदेव को जन्मदिन की भी बधाई दी।

समारोह के उद्घाटन–सत्र में केन्द्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे ने कहा कि श्रीरंजन सूरिदेव जी भारतीय ज्ञान–परम्परा के एक सुदृढ़ स्तंभ हैं।

समारोह के उद्घाटन–सत्र में माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति श्री अच्युतानंद मिश्र, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ॰ सच्चिदानंद जोशी, प्रो॰ अरूण कुमार भगत आदि ने भी संबोधित किया। धन्यवाद–ज्ञापन श्री अभिजीत कश्यप एवं संचालन श्री कृष्णकांत ओझा ने किया। कार्यक्रम में डॉ॰ शिवनारायण ने श्रीरंजन सूरिदेव के भेजे गये संदेश को पढ़कर सुनाया जिसमें उन्होंने यह कहा है कि वे शब्द और संस्कृति की साधना में आगे भी लगे रहेंगे।

कार्यक्रम में राज्यपाल ने श्री अरूण कुमार भगत द्वारा संपादित ग्रंथ ''साहित्य और साहित्यकार–सर्जक –आचार्य श्रीरंजन सूरिदेव'' को भी लोकार्पित किया।

.....